उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांकः 723 /एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनाँकः 06–09–2023

दिनांक	:	06 सितम्बर, 2023
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की ग्यारहवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2023–24 की ग्यारहवीं बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 06 सितम्बर, 2023 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक; शुआट्स, प्रयागराज के मौसम वैज्ञानिक; नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के मौसम वैज्ञानिक व धान प्रजनक; केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ; कृषि विभाग; गन्ना विभाग; उद्यान विभाग; पशुपालन विभाग; मत्स्य विभाग; रेशम विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

आगामी सप्ताह (06 से 13 सितम्बर, 2023) का मौसम पूर्वानुमान

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आगामी सप्ताह (06 से 13 सितम्बर, 2023) के दौरान प्रदेश के दक्षिणी भागों (बुंदेलखण्ड एवं विन्ध्य क्षेत्र) में मेघगर्जन एवं वज्रपात के साथ ज्यादातर स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त पूर्वी उत्तर प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में कुछ स्थानों पर जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कहीं–कहीं छिटपुट वर्षा होने की संभावना है। इसी क्रम में 06 से 08 सितम्बर, 2023 के दौरान बुंदेलखण्ड क्षेत्र में एक–दो स्थानों पर भारी वर्षा होने की भी संभावना है। इस सप्ताह के दौरान प्रदेश में अधिकतम तापमान सामान्य के आस–पास बने रहने तथा अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता 80 से 95 प्रतिशत एवं न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता 60 से 75 प्रतिशत के बीच रहने की संभावना है।

01 जून से 06 सितम्बर, 2023 तक प्रदेश में मानसून के दौरान औसत वर्षा 634 मिमी के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष 502 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य वर्षा का 79 प्रतिशत है। प्रदेश के सभी 75 जनपदों में से 01 जनपद (एटा) में अत्यधिक वर्षा जबकि 10 जनपदों में अधिक वर्षा, 17 जनपदों में सामान्य वर्षा, 41 जनपदों में न्यून वर्षा एवं 06 जनपदों (कौशाम्बी, मिर्जापुर, मऊ, चंदौली, भदोही, पीलीभीत) में अतिन्यून वर्षा प्राप्त हुई है। मानसून के दौरान 06 सितम्बर, 2023 तक सबसे अधिक वर्षा बिजनौर में 1028.6 मि.मी. हुई जो दीर्घकालिक औसत से 30 प्रतिशत अधिक है। सबसे कम वर्षा भदोही में 162 मि.मी. दर्ज हुई जो दीर्घकालिक औसत से 76 प्रतिशत कम है।

कृषि विभाग, उ.प्र. से प्राप्त खरीफ फसलों के आच्छादन आंकड़ों के अनुसार दिनांक 31 अगस्त, 2023 तक कुल लक्ष्य 96.20 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 96.24 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 100.45 प्रतिशत है। सुगंधित धान का लक्ष्य 8.62 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 9.56 लाख हेक्टेयर की पूर्ति हो चुकी है जो लक्ष्य का 110 प्रतिशत है। संकर धान के लक्ष्य 15.88 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 15.42 लाख हेक्टेयर में पूर्ति हो चुकी है, जो लक्ष्य का 97 प्रतिशत है। मक्का की बुआई के लक्ष्य 8 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 7.63 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है, जो लक्ष्य का 95 प्रतिशत है। ज्वार के लक्ष्य 2.18 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 2.26 लाख हेक्टेयर की पूर्ति की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 104 प्रतिशत है। बाजरा के लक्ष्य 10.10 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 10.21 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 101 प्रतिशत है। उर्द के लक्ष्य 7.25 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 6.62 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 91 प्रतिशत है। मूंग के लक्ष्य 0.40 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.46 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 115 प्रतिशत है। अरहर के लक्ष्य 3.60 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 3.57 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 99 प्रतिशत है। उल्लेखनीय है कि मूंगफली आच्छादन लक्ष्य 1.25 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 2.25 लाख हेक्टयर में बुवाई हुई है जो लक्ष्य का 180 प्रतिशत है।

सोयाबीन के लक्ष्य 0.50 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.46 लाख हेक्टेयर में बुवाई हुई है, जो लक्ष्य का 93 प्रतिशत है। तिल के लक्ष्य 4.25 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 3.52 लाख हेक्टेयर में बुवाई हुई है, जो लक्ष्य का 83 प्रतिशत है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- आगामी सप्ताह (06 से 13 सितम्बर, 2023) के दौरान विंध्य क्षेत्र एवं बुन्देलखण्ड क्षेत्रों में अच्छी वर्षा जबकि, प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में छिटपुट वर्षा की संभावना है। अतः कृषक खरीफ फसलों की क्रांतिक अवस्थाओं में सिंचाई की व्यवस्था करें।
- कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पौधो के समुचित विकास हेतु विशेष रूप से धान में कल्ले, गाँठ बनने व फूल खिलने की अवस्था में पर्याप्त नमी बनाये रखे।
- जिन क्षेत्रों में वर्षा सामान्य से कम हुई है वहां पर खाद्यान फसलों में 2 प्रतिशत यूरिया व पोटाश का छिड़काव करें।
- वातावरण में तापक्रम एवं नमी की अधिकता रहने से रोग एवं कीट का प्रकोप बढ़ने की स्थिति में कीट नियंत्रण हेतु पर्यावरण हितैषी उपायों यथा प्रकाश-प्रपंच, बर्ड पर्चर, फेरोमोन ट्रैप, ट्राइकोगामा तथा रोग नियंत्रण हेतु ट्राइकोडरमा का प्रयोग करें। कीट एवं रोग नियंत्रण हेतु कीटनाशी रसायनों का प्रयोग अंतिम उपाय के रूप में करें।
- वर्षा कम होने की स्थिति में दीमक की समस्या होने पर क्लोरोपाइरीफास की (20 ई.सी.) की 1.2 ली. मात्रा सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें।
- प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाय, कृषि रसायनों का प्रयोग वैज्ञानिक सलाह पर ही संस्तुति अनुरूप किया जाय।
- जिन क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा नहीं हुई है, वहाँ के सब्जी उत्पादकों को सलाह दी जाती है कि वे अल्प अवधि एवं कम पानी में भी अच्छी उपज प्राप्ति हेतु पालक, मूली, गाजर, शलजम, चुकन्दर, मेथी व धनिया आदि की खेती करें।
- फलदार पौधे के बागों में जो पौधे मर गये हो वहां गैप फिलिंग करें।

धान की खेती

- धान में प्रथम टाप ड्रेसिंग के उपरांत 15 से 25 दिन पर द्वितीय (बाली निकलते समय) टाप ड्रेसिंग यूरिया से करें।
- धान की जस्ता की कमी से खैरा रोग होने पर 05 से 10 किग्रा. जिंक सल्फेट एवं 2 प्रतिशत यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- धान में पर्ण झुलसा के लक्षण दिखने पर कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्राम एवं स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 15 ग्राम प्रति हेक्टेयर 500 ली. पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- झूठा कडुंवा (फाल्स स्मट) रोग से बचाव हेतु बाली निकलते समय प्रोपीकोनाजोल 500 मिली. अथवा हेक्साकोनाजोल 1 ली. की मात्रा 500 ली. पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- धान की फसल में पत्ती लपेटक, तनाछेदक, हरा फुदका एवं हिस्सा कीट से बचाव के लिये कार्टाप हाईड्रोक्लोराइड (50 एस.पी.) की 150 से 200 ग्राम मात्र 200 ली. प्रति एकड़ पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- खरपतवार नियंत्रण के लिये निराई का कार्य शीघ्रता से सम्पन्न करें।
- रोपाई किये गये धान सिंचाई के खेतों में सिंचाई के साधनों का समुचित प्रयोग करते हुये ही पानी भरें।
- वर्तमान मौसम भूरा धब्बा रोग के लिये अनुकूल है अतः प्रकोप होने पर मैकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. मात्रा 500-750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ऊसर क्षेत्रों में धान के खेत में पर्याप्त नमी अवश्य बनाये रखे।

मक्का की खेती

- मक्का में तना छेदक के 10 मृत गोभ होने पर कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा. अथवा डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. 1.0 ली. प्रति हे. अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई.सी. 1.50 ली. का प्रति हे. बुरकाव/500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

अरहर की खेती

- यदि किन्हीं कारणों से बुवाई में विलम्ब होने की दशा में सितम्बर के प्रथम पखवारे में बहार एवं पी.डी.ए.-11 की शुद्ध फसल के रूप में बुवाई की जा सकती है, परंतु कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. एवं बीज की मात्रा 20 से 25 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।

- अरहर में पत्ती लपेटक का प्रकोप दिखाई देने पर डाईमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 200 मिली. प्रति हे. 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

उर्द–मूँग की खेती

- उर्द /मूंग की पत्तियों पर सुनहरें चकत्ते पड़ गये हों या सम्पूर्ण पत्ती पीली पड़ गयी हो तो यह पीला चित्रवर्ण रोग (यलोमोजेक) है। यह रोग सफेद मक्खियों द्वारा फैलता है। ऐसे रोगग्रस्त पौधों को खेत से उखाड़कर जमीन में गाड़ दें। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए डाइमिथोएट 30 ई0सी0 01 लीटर या मिथाइल ओ–डिमेटान (25ई0सी0) 01 लीटर प्रति हे0 की दर से दो–तीन छिड़काव करें।

तोरिया की खेती

- तोरिया की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों टा–9, पी.टी.–303, भवानी मध्य उ.प्र. हेतु संस्तुत टाइप–36 तथा तराई क्षेत्र हेतु संस्तुत प्रजाति पी.टी.–30 आदि की बुवाई हेतु मौसम अनुकूल है अतः खेत में उपयुक्त नमी की दशा में बुवाई करें।

मूंगफली की खेती

- मूंगफली में जड सड़न एवं टिक्का रोग लगने का समय है अतः सतर्क रहें। प्रकोप होने पर खड़ी फसल पर मैंकोजेब अथवा कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू.पी. 225 ग्राम/हे. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2.5 किग्रा. अथवा जीरम 27 प्रतिशत तरल के 3 लीटर अथवा जीरम 80 प्रतिशत के 2 किग्रा. के 2–3 छिड़काव 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अन्तर पर करें।
- मूंगफली में सफेद गिडार के प्रबंधन हेतु खड़ी फसल में क्लोरपाईरीफॉस 20 ई.सी. 4 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से जड़ों में अथवा सिंचाई के माध्यम से डालें।

गन्ना की खेती

- शरदकालीन गन्ना बुवाई हेतु सिंगल बड नर्सरी तैयार करने का उपयुक्त समय चल रह है। महिला स्वयं सहायता समूह एवं अन्य कृषक नवीन गन्ना किस्म की नर्सरी तैयार करना प्रारंभ कर दें।
- शरदकालीन गन्ना बुवाई से पूर्व मृदा उपचार ट्राइकोडर्मा (10 कि.ग्रा. प्रति हे.) एवं बीज उपचार कार्बेन्डाजिम (01 प्रतिशत) से अवश्य करें।
- बुवाई हेतु को.शा. 13235, को.लख. 14201, को. 15023, को.शा.17231, को.शा.16233 आदि प्रवेश हेतु स्वीकृत किस्मों की ही बुवाई करें।
- लालसड़न रोग से प्रभावित क्लम्प/मूढ़ को उखाड़कर नष्ट कर दें तथा उखाड़े गये स्थान पर 10–20 ग्राम ब्लीचिंग पाऊडर डाल दें।
- तेज हवा एवं वर्षा से गन्ना गिरने की दशा में उसकी यथाशीघ्र बंधाई कर दें जिससे कम से कम नुकसान हो।
- जिन किसान भाईयों ने ढ़ैचा की पलटाई अभी तक नहीं की है तुरंत पलटाई करें।
- मृदा में कार्बनिक पदार्थ की वृद्धि हेतु 100 कुन्टल सड़ी हुई गोबर की खाद अथवा 50 कुन्टल प्रेसमड अथवा 25 कु. वर्मीकम्पोस्ट प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।

सब्जियों की खेती

- बैंगन व मिर्च की तैयार बेहन की मेड़ों पर रोपाई करें।
- बेहन हेतु गोभीवर्गीय सब्जियों, शिमला मिर्च तथा टमाटर आदि की नर्सरी में बुआई उठी हुई क्यारियों (रेज्ड बेड) में करें तथा पूर्व में बोई गई तैयार पौध की रोपाई भी यथाशीघ्र करें।
- इस समय सब्जियों में कीड़ों का प्रकोप सर्वाधिक होता है। अतः इससे बचाव हेतु नीम आधारित उत्पादों, वर्मीवाश अथवा संस्तुति के अनुरूप कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- शाकभाजी फसलों में विषाणु जनित रोगों का प्रकोप होने पर प्रभावित पौधों को खेत से निकालकर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें तथा संस्तुत अंतःप्रभावी कीटनाशकों को छिड़काव करें।
- लतावर्गीय सब्जियों को कीट एवं रोगो से बचाने की विशेष आवश्यकता है। फल मक्खी कीट की रोकथाम के लिये 10 मि0ली0 मैलाथियान एवं 10 मि.ली. मिथाईल यूजीनाल को 05 ली0 पानी में घोलकर 500 ग्राम गुड़ या शीरा को मिलाकर प्रति हे0, 15–20 जगह चौड़े मुँह की शीशी या बॉटल में खेत में रखें।
- लौकी फसल में जड़ सड़न एवं कालर राट की रोकथाम के लिए पौधों की जड़ों के पास कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर ड्रेन्चिग करें।

- परवल की लता लगाने का यह उपयुक्त समय है।
- आलू की अगेती किस्मों जैसे कुफरी चन्द्रमुखी तथा कुफरी अशोका की बुआई का उपयुक्त समय मध्य सितम्बर है। बुआई के 7–10 दिन पहले शीत भण्डार से बीज आलू को बाहर निकालें। शीत भण्डारण में भण्डारित बीज में यदि अंकुर निकल आये तो उनको छाँटकर अलग कर दें।
- यदि शीत गृह में भण्डारण करने से पूर्व आलू उपचारित न किया गया हो तो शीतगृह से आलू निकालकर छाँटने के तुरन्त बाद आलू के कन्दों को बोरिक एसिड के 3 प्रतिशत घोल से 30 मिनट तक उपचारित करके छायादार स्थान में सुखा लें। अंकुरित आलू बीज को उपचारित न करें।

बागवानी

- पूर्व में लगाये गये नवीन बागों में जो पौधें किन्हीं कारणोंवश मर गये हों उनके स्थान पर नये पौधे लगायें।
- आम के बाग के प्रथम दस वर्षों में अधिक लाभ के लिये अंतः फसल के रूप में आलू, मिर्च, टमाटर, लोबिया तथा ग्लेडियोलस की खेती की जा सकती है।
- आम में द्विवार्षिक या अनियमित फलन होने पर जिन बागों में पोषक तत्व प्रबन्धन हो रहा हो उनमें पैक्लोब्यूट्राजॉल (कल्टार) 3.2 मिली. प्रति मी. वृक्ष छाया क्षेत्र की दर से पानी में घोलकर तने से 1.5–2 मी. की दूरी पर बनाई गई नालियों में डालें तथा कुछ दिनों तक नमी बनायें रखें।
- मैंगोशूट गालमेकर (शाखा गॉठ कीट) से प्रभावित बागों में प्रकोपित शाखाओं को 4–5 इंच नीचे से काट कर नष्ट करें तथा क्यूनालफास 2.5 ई.सी. अथवा डाइमेथेएट 30 ई.सी. की 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल कर पेड़ों पर छिड़काव करें। आम के बागों में रेड रस्ट अथवा एन्थ्रेक्नोज का प्रकोप होने की दशा में कॉपर आक्सीक्लोराइड (3 ग्राम/ली.पानी) का छिड़काव करें।
- आम के पुराने बागों में गमोसिस के नियन्त्रण हेतु भूमि में खाद की तरह कॉपर सल्फेट 250 ग्रा., जिंक सल्फेट 250 ग्रा., बोरेक्स 125 ग्रा. एवं बुझा चूना 100 ग्रा. (10 वर्ष से अधिक आयु के पौधे हेतु) प्रति वृक्ष की दर से मिलायें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- केले में फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें तथा केले की तलवार पुत्ती को छोड़ते हुये शेष पुत्तियों की कटाई करें तथा 50 से 60 ग्राम यूरिया प्रति पौधा देकर मिट्टी में मिलायें।
- इस समय केले में बीटिल कीट का प्रकोप हो सकता है जिसके नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरॉन 3–4 ग्राम प्रति पौधे की दर से गोफे में तथा मिट्टी में मिलायें। इसके साथ–साथ पर्ण चित्ती, सिगार एण्ड तथा एन्थ्रेकनोज रोगों का प्रकोप भी केले में हो सकता है जिसके नियंत्रण हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड (3 मिली0/ली0 पानी) का छिड़काव करें।

पशुपालन

- वर्तमान में खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का टीकाकरण सभी पशुचिकित्सालयों में कराया जा रहा है। यह सुविधा सभी पशुचिकित्सालयों पर निशुल्क उपलब्ध है। बड़े पशुओं में गलाघोटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी क्यू वैक्सीन से टीकाकरण करायें।
- लम्पी स्किन रोग (एलएसडी) एक विषाणु जनित रोग है, जिसकी रोकथाम हेतु पशुपालन विभाग द्वारा टीकाकरण प्रोग्राम चलाया जा रहा है। सभी कृषक/पशु पालक अपने निकटतम पशु चिकित्सालय से सम्पर्क कर इसकी रोकथाम संबंधी उपाय एवं टीकाकरण की जानकारी ले सकते हैं।
- दैवीय आपदा के समय, बबूल सुबबूल, गूलर, खेजरी इत्यादि वृक्षों की पत्तियों को चारे के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। साथ ही साथ गन्ने की पत्तियों का प्रयोग हरे चारे के रूप में किया जा सकता है।
- जलभराव की स्थिति होने पर मक्खी, मच्छर का प्रकोप बढ़ जाता है जिससे बचाव हेतु आवश्यक दवाओं/कृमिनाशक का नियमित छिड़काव आवश्यक रूप से कराया जाय।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वारा पर पशु चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु पशुपालक टोल फ्री हैल्पलाइन नं. 1962 पर सम्पर्क कर योजना का लाभ ले सकते हैं।

मत्स्य पालन

- वर्तमान में उत्तर प्रदेश मत्स्य विकास निगम की गोमती हैचरी लखनऊ, अमेठी हैचरी, कोंच हैचरी, जालौन अयोध्या हैचरी, गोरखपुर हैचारी, परीक्षितगढ़ हैचरी मेरठ के अतिरिक्त विभागीय मत्स्य प्रक्षेत्रों पर प्रचुर मात्रा में मत्स्य बीज व मत्स्य अंगुलिकायें उपलब्ध है। उक्त के अतिरिक्त विभागीय योजनाओं यथा नीली क्रांति, प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना में निर्मित हैचरियों पर भी मत्स्य बीज की उपलब्धता है। जहां से किसान भाई गुणवत्तापूर्ण मत्स्य बीज क्रय कर सकते है।
- जलीय गुणवत्ता के लिये तालाब में चूने का प्रयोग करें। उर्वरीकरण की दृष्टि से 250 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर चूने का प्रयोग उपयुक्त होता है। यह मत्स्य रोग नियंत्रण में भी सहायक होता है।
- जिन तालाबों में गन्दा पानी आ गया हो उनमें जियोलाइट 25 किग्रा./हे. की दर से बालू में मिलाकर तालाबों में डलवाएं। इससे पानी साफ हो जायेगा और बदबूदार गैसेज निकल जायेगी। ताजा पानी भी मिलायें।
- जिन तालाबों में मत्स्य बीज संचय हो चुका है उनमें प्लेंकटामीन 5 किग्रा. प्रति हे. की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें इससे तालाब में प्लेंकटान की मात्रा में वृद्धि होगी जो कि मछलियों का प्राकृतिक भोजन है।
- जो मत्स्य पालक बीज संचय कर चुके है वह अपने तालाबों में सीफैक्स 1 ली./हे. 200 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

रेशम

- रेशम कीट पालन के इच्छुक कृषक अपने नजदीकी रेशम अधिकारी/प्रभारी से सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त कर कीटपालन कार्य करें।
- शहतूत व अर्जुन के लगाये हुये नवीन पौधों की समुचित देखभाल कर आवश्यक नमी बनाये रखें।
- मानसून व्यवसायिक फसल द्वितीय का कीटपालन दिनांक 10 सितम्बर, 2023 से प्रारंभ होने जा रहा है, इस हेतु समस्त तैयारियां पूर्ण कर लें। कीटपालन भवन एवं उपकरणों का 2 प्रतिशत फार्मलीन के घोल का छिड़काव कर विशुद्धीकरण कर लिया जाय तथा विशुद्धीकरण उपरांत कीटपालन भवन को 24 घंटे के लिये एयरटाईट बंद कर दें।
- टसर कीटपालन में डाबा फसल कीटपालन दिनांक 15 सितम्बर, 2023 से प्रारंभ होन जा रहा है, इस हेतु समस्त आवश्यक तैयारियां पूर्ण कर ली जाय।

वानिकी

- वृक्षारोपण उपरांत जो पौधें मर गये हो उनके स्थान पर गैप फिलिंग करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 14 सितम्बर, 2023 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

(संजय सिंह) 06/09/23
महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।

9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
16. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
17. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
18. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
19. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
20. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
21. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
22. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
23. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
24. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
25. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
26. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
27. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
28. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
29. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
30. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
31. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
32. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
33. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
34. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
35. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
36. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
37. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
38. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
39. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
40. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
41. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
42. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
43. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

06-09-23

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2023–24 की ग्यारहवीं बैठक दिनांक 06 सितम्बर, 2023 की उपस्थिति

1. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
2. डा. विजय बहादुर द्विवेदी, संयुक्त निदेशक शाकभाजी, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
3. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
4. डा. एस. सी. शुक्ला, संयुक्त निदेशक, पशुपालन, उत्तर प्रदेश
5. डा. अतुल कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ।
6. डा. एल.एस. यादव, उपनिदेशक, कृषि विभाग, लखनऊ
7. श्री ए.के.शुक्ला, सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
8. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
9. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,अयोध्या।
10. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
11. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना कालेज ऑफ फारेस्ट्री शुआट्स, प्रयागराज।
12. डा. संजय अरोड़ा, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ।
13. डा. सुनील कुमार झा, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ।
14. श्री नीरेन्द्र कमार, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश।